17730
670
17

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.

1362/Tal21

Call No.

Accession No. 670

GIPNLK—7/DAND—5-9-60—15,000

4/1911

670 No 23 396
Rashtriya Lahar
670

राष्ट्रीय-लहर

संग्रह कर्ता—

उमाचरनलाल गोरखपुर

मुद्रक व प्रकाशक—

कसौधन पुस्तकालय

गोरखपुर।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
29 FEB. 1932
Reg. No............

सर्वाधिकार स्वरक्षित

प्रथमवार १००० } १९३१ { मूल्य -)

891.431 L15R

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 670
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

राष्ट्रीय-लहर

मस्ताना भगत सिंह

आजादी का दीवाना था मस्ताना भगतसिंह ।
बम केस में पकड़ाना ये दीवाना भगतसिंह ॥
आलम की एक शान था मस्ताना भगतसिंह ।
हम बागीका अरमान था दीवाना भगतसिंह ॥
लाहौर का रहने वाला था वो शेरोववर दिल ।
आजादी की थी चाह उसे मस्ताना भगतसिंह ॥
देता था लाल परचा वो लाहौर के थानों में ।
हो जावो सावधान ये कहता था भगतसिंह ॥
होती थी मीटिंग असेम्बलीमें जिस वक्त फेकाबम ।
इस केस में पकड़ा गया मस्ताना भगतसिंह ॥
श्रीराजगुरु और सुखदेव दोनों थे उसके साथी ।
फासी हुई तीनों को मस्ताना भगतसिंह ॥

देश दुलारे भगत सिंह।

सुखदेव, भगतसिंह राजगुरु ये, तीनो देशदुलारे हैं। फांसी पे लटक कर जान दी जी जानसे हमको प्यारे हैं॥ यह मौत नहीं, यह जीवन है यह मरना, नहीं यह जीना है। नामूसे वतन पे शहीद हुये नामू से वतन को प्यारे हैं॥ वह अपनी जानपे खेले हैं, वे लोग उनकी कुर्बानी हैं ईसारके चर्खे वाला पर रोशन ये चमकते तारे हैं॥ गांधीने सुनी जिस वक्त खबर, अफसोस किया और फरमाया। "मेरी तहरीकके हकमें उनके खूनके कतरे शरारे हैं॥" जब उनकी जवानीका नकशा आँखों के सामने आता है। मगमूम हमातन रंजोगमसे हो जाते हम सारे हैं हम अपने कौमी शहीदोंकी क्यो याद दिलोंसे महब करें। और किसी ने भुलाये हैं क्या और किसी ने बिसारे हैं॥

बीर भगत सिंह।

बे खुदीमें कह रहा हूं होश अगर आजायगा।
देखनेको जो तमाशा है वह देखा जायगा॥
मैं भी अपनी घातमें हूं वह भी अपनी घातमें।
आयेगा मौका समझनेका तो समझा जायगा॥
हजरते बिस्मिल तड़प कर जान देते हैं अबस।
यह समां बेदर्द कातिलसे न देखा जायगा॥
दिलसे जीसे शौकसे अब काम करता कौन है।
बादिये खौफो खतरमें पाँव धरता कौन है॥
जिन्दगीके दिन जो थे वह नजरे जिन्दा होजावे।
मुझको आजादी कहाँ आजाद करता कौन है॥
नाव भी मझधारमें बादे मुखालिफ़ भी करीब।
डूबकर दरियाये गमसे पार उतरता कौन है॥
छिड़ गई चारों तरफसे अब तो आजादीकी जंग।
देखना यह है वतन पर अपने मरता कौन है॥

—-:※※:—

गाँधी ।

तेरा जो न गांधी जी औतार होता ।
तो सोता वतन फिर न बेदार होता ॥
तु जंगे अहिंसा जो छेड़ी न होती ।
खुदा जाने क्या क्या न दुश्वार होता ॥
जो जानो की बाज़ी लगाई न होती ।
तो फिर कौन भारतका ग़मख्वार होता ॥
अगर तुझको शौके शहादत न होता ।
किसीको भला कैसे एतबार होता ॥
लहू कौमियतका उबलता न तुझमें ।
तो संसारका आज क्यों प्यार होता ॥
सत्याग्रहकी नइया चलाई न होती ।
कपटका न दरिया कभी पार होता ॥
अगर ग्यारह शर्तें बनाई न होती ।
तो काबूमें तेरे न मक्कार होता ॥
जो तू जिन्दगी मेरी बख्शी न होती ।

तो कौन आज जीवनका आधार होता ॥
न जो चक्र चरखा चलाता ऋषी तू ।
स्वदेशीका हरगिज़ न परचार होता ॥
जो रहबर वतनका न होता तू मोहन ।
"किशोर" हिन्द हकपर न तय्यार होता ॥

ग़ज़ल

सुनाओ वादा न कल का मुझको,
स्वतन्त्रता को हम आज लेंगे ।
न स्वर्ग की भी मुझे है चाहत,
फकत हम अपना स्वराज लेंगे ॥
अब हिन्द माता का धर के आंचल,
मचल के बच्चे ये कह रहे हैं ।
कि कर्ण अर्जुन के सिर पै था जो,
वही पहिरने को ताज लेंगे ॥
जो फस के परतंत्रता में तैंतिस,
करोड़ आजार सह रहे हैं ।
उसी के कीमत में खून देकर,

खरीद अपना एलाज लेंगे ॥
भविष्य डंके की चोट देकर,
यतीन्द्र से यह कह चुका है।
जब हिन्द को वो स्वराज देंगे,
तो पहले खूँ का खेराज़ लेंगे ॥
कपट का पाशा था फेंका शकुनी,
तो जीत बिल्कुल लिया कुरू ने।
मगर ये कहते थे कृष्ण मन में,
कि राज फिर धर्मराज लेंगे ॥
उधर असंख्यों हैं बम के गोले,
औ कितने बन्दूक वो तमंचे।
इधर अहिंसा है शस्त्र अपना,
इसी से संग्राम साज लेंगे ॥
निकलके "शायक" के दिलसे आहें,
प्रभू से बरदान हैं ये लाई।
कि फूल गुलशन की लेलें "गांधी"
औ कांटे को बदमिजाज लेंगे ॥

ग़ज़ल

अब तो कुछ होश संभाला है इन गाँधी टोपी वालों ने। बस नाक में दम कर डाला है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥ घर घर में सूत तयार करें और खद्दर का प्रचार करें। योरुप का किया दिवाला है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥ जबरनही नमक बनाते हैं गोली से नहीं डराते हैं। कानून रद्द कर डाला है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥ मद गाँजे पर देते धरना नहि दाल गले अब क्या करना। मुश्किल रहना कर डाला है इन गाँधी टोपा वालों ने ॥ देशी पहिनो समझाते हैं और विदेशी वस्त्र जलाते हैं। एलान यह अजब निकाला है इन गाँधी टोपी वालों ने ॥ नहि दाव में बिलकुल आते हैं सब जेल खुशी से जाते हैं। है स्वतन्त्र ये फरमा डाला इन गाँधी टोपी वालों ने ॥ सावित गो अहिंसा पर है भले नहि दमन नीति से काम चले। वे खुद क्या नाम निकाला है इन गाँधी टोपी वालों ने।

गज़ल ।

जाने क्या जादू डाल दिया नदनन्द तुम्हारी आंखों ने । नज़रों की राह पिलाया है मकरन्द तुम्हारी आंखों ने ॥ भागूँ दिल छूटा जाता है, ठहरूँ झाँकी की ताव नहीं । दोंनो ही रस्ते कर डाले, हैं बन्द तुम्हारी आँखों ने ॥ सैनों से आश बँधा देना एक प्रेम तरङ्ग उठा देना । क्या बतलाऊँ क्या क्या न दिया आनन्द तुम्हारी आंखों ने ॥ चटकीं, मटकीं, सहमी, झिझकी, सकुची, चमकी ताकामारा । कैसे कैसे यह सीखे हैं, छलछन्द तुम्हारी आंखों ने ॥ चितवन से चित्त चुराते हो पलकों से तीर चलाते हो । एक अद्भुत जाल बिछाया है बृज चन्द तुम्हारी आँखों ने ॥ करुणा की दृष्टि पड़ी जिसपर उसका सब सङ्कट दूर किया । "बेकल" का छिन में काट दिया, भवफन्द तुम्हारी आँखों ने ॥

गज़ल

हिन्दू भी मुसलमाँ भी सोचें इस कुशते खूं से क्या हासिल। यह जोश बुरा है आपस का, यह जोशे जनूँ से क्या हासिल॥ मस्जिद तोड़ी मन्दिर तोड़ा, अपने अपने सर को फोड़ा। अल्लाह के घर का यह नक़शा अफ़आले जनूँ से क्या हासिल ? क्यों हाथा-पाई करते हो, क्यों मरते हो क्यों लड़ते हो। क्यों खून बहाते जाते हो, इस बारिशे खूँ से क्या हासिल ? हर लाग बुरी हर आग बुरी, हर रङ्ग बुरा हर ढङ्ग बुरा। जो फूंक दे अपने घर को भी इस सोजे दुरूँ से क्या हासिल ? ऐ अहले-वतन मानो कहना, यूँ हरगिज़ तेग़ वदस्त न हो। तुम पस्ती में पहले ही से हो, अब और न मिट कर पस्त न हो॥ एक-एक से यह कहता हूँ मैं, हाँ हिन्द वतन है दोनों का। तुम दोनों इसके

माली हो, बेशक यह चमन है दोनों का ॥ मन्दिर में शङ्ख बजाने दो, मस्जिद में अज़ाने देने दो ! क्यों रञ्ज कुहन है दोनों में, क्या रंज कुहन है दोनों का ॥ बस यादे-खुदा में मस्त रहो, क्यों जङ्ग करो क्यों मुफ्त लड़ो। अगियार इसी पर हँसते हैं, बदनाम चलन है दोनों का ॥ यह सोच लो तुम अपने दिल में, क्या नफ़ा है लड़ने भिड़ने में। नुकसान किसी का और नहीं, नुकसाँ हम वतन है दोनों का ॥ बिस्मिल की नसीहत दिल से सुनो, लाज अपनी अपने हाथ रहे। मिल जाओ गले सङ्गम की तरह, दोनों का हमेशा साथ रहे ॥

ग़ज़ल।

कोशिश खाली गई न रिहाई भई।
आखिर फाँसी ये उनको लगाई गई ॥
प्रार्थना ये हिन्द की किस तौर ठुकराई गई ॥

हो गई आखीर फाँसी कुछ न सुनवाई हुई।
शान भारत की कैसी घटाई गई॥
छोड़ते किस तौर उनको खौफ़ था इस बात का।
जिन्दे रहें गर वीर ये मौका लगे नहिं घात का॥
कारण ये ही की न सुनवाई हुई॥
ये नहीं सोचा उन्हों नें अन्याय की कब खैर है।
पाप का घट भर चुका अब फूटने की देर है॥
फाँसी बे वक्त उनको लगाई गई॥
तीन के फाँसी चढ़े क्या हिन्द सूना हो गया।
वीर तो सुर पुर गये पर आग दूना हो गया॥
शान्त प्रजा में खल बल मचाई गई॥
उनके मिटाए क्या हुआ इसकी न गर तदबीर है।
हर भारती के दिल पै उनकी जो खिची तस्वीर है॥
कुछ न किया गर न वो मिटाई गई॥
आजादगी का शैदा था बीर बस दिल जान से।
उद्देश्य था उसका यही क्यों हम डरें अन्याय से॥
जब कि है ही हमारी खताई नहीं।

खो चुके

खोल दो आंखें उठो लड़कर वतन को खो चुके
हम तुम्हारे हो चुके और तुम हमारे हो चुके
हुक्म गांधी मानिये आज़ाद होने के लिये
माडरेटो ने किया क्या जिन्दगी भर रो चुके
तुम फूल हो हम पंखड़ी तुम चीर हो हम नीर हैं
अब दई कैसी निभेगी प्रेम अंकुर बो चुके
बिल्लियों ने बैर करके न्याय बन्दर को दिया
अब सम्हलना जागना हां सो चुके सो२ चुके
क्यों शहीदों की कबर पर नींद आती है तुम्हे
भाइयों के खून से अपने जिगर को धो चुके
खून करता है कोई गर मज़हबे इस्लाम का
हिन्दुओं का खून है जब एक हम सब हो चुके

गज़ल

मुसीबत से परेशां हैं बहुत हिन्दोस्तां वाले ।
इशारा इस तरफ भी हो ज़रा बांकी कमां वाले ॥
फना के बाद जेरे ख़ाक दब कर खाक होते हैं ।
गरीबों मुफलिसों ज़रदार और ऊंचे मकां वाले ॥

यह क्या इन्साफ कैसी मुन्सफी है ऐश है आलम ।
ज़बां होते भी शिकवा कर नहीं सकते ज़बां वाले ॥
नहीं नाजो जरो मालो सिपाही फौज लश्कर पर ।
कि खाली हाथ जाना है अरे नामों निशा वाले ॥
जला कर खाक कर देंगे फलक को दममें ऐ बेखुद ।
करेंगे आह सोज़ाँ दिल से गर आहो फ़ुग़ाँ वाले ॥

चन्द्र शेखर "आज़ाद"

याद आता है ज़माना आज भी आज़ाद का ।
किस तरह लूटा चमन ए बुलबुले नाशाद का ॥
किस तरह दुनियाँ सेजन्नत में गया वो शेरदिल ।
रूबरू देता गवाही पेड़ इलाहाबाद का ॥
था चमन का फूल खिलता यह हमें उम्मीद थी ।
था वही ख़ाका मेरी बिगड़ी हुई रूदाद का ॥
बुलबुले शैदाने खींची दिल से यह भारी सदा ।
हो गया है मर्ज मेरे दिल को तेरी याद का ॥
नाम इलाहाबाद में जिसका वहाँ अल्फ्रेडपार्क ।

हो गया मशहूर "प्यारे" बाग है आज़ाद का ॥

गज़ल।

बेड़ियों की पैर में झनकार रहने दीजिये ।
तौक कुछ दिन तो गलेका हार रहने दीजिये ॥
उल्फ़ते गाँधी का दावा और सिर पर फ़िल्ट केप ।
हो चुका बस हो चुका सरकार रहने दीजिये ॥
सख्त जाँहूँ कुछ असर इन ओछे वीरोंका नहीं ।
म्यान ही में अपनी ये तलवार रहने दीजिये ॥
शस्त्र वर्षा होगी रूहे उठ खड़ी होंगी अभी ।
बस क़यामत खेज यह रफ़तार रहने दीजिये ॥
एक ही दोनों हैं या दोनों का रस्ता एक है ।
इमतियाने तसबियो जुन्नार रहने दीजिये ॥
हम यहाँ खद्दर से अपना काम सब लेंगे चला ।
जीन अपनी यह समुन्दर पार रहने दीजिये ॥
काम का है वक्त अख़तर आइये मैदान में ।
अब दलीलो हुज्जतों तकरार रहने दीजिये ॥

मिलन मंत्र।

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते।
बुलबुलें कुर्बान होती हैं चमन के वास्ते॥
तर्स आता है तुम्हारे हाल पै ऐ हिन्दुओं।
गैर के मोहताज हो अपने कफ़न के वास्ते॥
देखते हैं आज जिसको शाद है आजाद है।
क्या तुम्हीं पैदा हुये रंजो महन के वास्ते॥
दर्द से अब बिलबिलाने का जमाना हो चुका।
फिक्र करनी चाहिये मर्जे कुहन के वास्ते॥
हिन्दुओं को चाहिये अब क़स्द क़ावे का करें।
और फिर मुस्लिम बढ़ें गंगो जमन के वास्ते॥

समाप्त

गोरखपुर प्रिन्टिङ्ग प्रेस में छपा।